भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केंद्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

15 सितम्बर, 2020

जनवादी–प्रेमी व जनहितैषी स्वामी अग्निवेश का निधन के प्रति शोक

जनवादी–प्रेमी एवं जनहितैषी स्वामी अग्निवेश का निधन के लिए उनका परिवार और मित्रों से हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी शोक व्यक्त करती है। 11 सितम्बर, 2020 को 80 वर्षीय अग्निवेश का निधन देश में जारी जनवादी, प्रगतिशील एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीय–मुक्ति आंदोलनों और जनहित समाज हेतु जारी ओदोलनों के लिए बड़ा नुकसान है। उन्होंने देश में बंधुआ मजदूरी का उन्मूलन के लिये अंतिम सांस तक संघर्ष किये थे। संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन के खिलाफ आवाज उठाये और क्रांतिकारी जनसंगठनों के सम्मेलनों और सभाओं के कई अवसरों पर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए थे।

2009 में जब आपरेशन ग्रीनहन्ट का शुरूआत हुई, तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री चिदंबरम ने स्वामी अग्निवेश से आग्रह किया कि अपनी सरकार के तरफ से हमारी पार्टी के साथ वार्ता के लिये इंतेजाम करें। वे उस आमंत्रण को तत्काल स्वीकार कर लिया एवं हमारी पार्टी के तत्कालीन प्रवक्ता कामरेड चेरुकूरि राजकुमार के साथ पत्राचार किए। उसी बीच सरकार का असली मकसद का उजागर हो गया। जुलाई 2010 में जब राजकुमार पत्रकार हेमचंद्र पांडे के साथ सफर करने के दौरान उन्हें पीछा करते हुए बीच रास्ते में पकड़कर आदिलाबाद जंगलों में झूठी मुठभेड़ में गोली मार कर हत्या की थी। इससे अग्निवेश बहुत हताश हुए और उन्हें झटका लगा था। उस संदर्भ में उन्होंने एक वक्तव्य में बताया कि वार्ता के लिए पहल कर 'अपराध' महसूस हूं, चिदंबरम मुझे धोखा किया है। वे जनहिता के लिए एक सही जनवादी प्रक्रिया चाहते थे। लेकिन उस क्रम में स्वयं बली का बकरा हुआ था।

अग्निवेश कई अवसरों पर दंडकारण्य आये थे। 2011 में एक आईएएस अधिकारी के साथ जब ताडिमेटला गांव के लोगों से मिलने के लिए जा रहे थे, उस समय उनपर कोया कमांडों एवं अपने परिवारों के साथ सलवा जुडुम गुण्डों ने हमला किया। दक्षिण बस्तर के ताडिमेटला इलाके में पुलिस द्वारा तीन आदिवासी गांवों के 250 से अधिक आदिवासी किसानों के घर जलाने के बाद, उन परिवारों को दैनिक उपयोगी सामग्री पहुंचाने के लिये अग्निवेश उस अधिकारी के साथ जा रहे थे। तत्कालीन बस्तर आजी एसआरपी कल्लूरि ने किसानों के घर जलाने की उस कार्रवाई के लिए गुरिल्लाओं पर आरोप लगाया। उसी साल में ही पूर्वी बस्तर में लोगों पर बार–बार हमला करने वाले 5 पुलिस वालों को गुरिल्लाओं के साथ मिलकर हमारे मिलिशिया ने अपने 'गिरफ्त' में ले लिये थे। उस के बाद पुलिस का अपील को लेकर गुरिल्लाओं से उन्हें छुड़वाने के उपलक्ष्य में कुछ जनहितैषी मित्रों के साथ अग्निवेश वहां गये और गुरिल्लाओं से बात कर पुलिस को छुड़ावाये थे।

2017 में झाखरण्ड के स्थानीय आदिवासी लोगों के आह्वान पर एक कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिये अग्निवेश पाकुड़ गये थे। उस समय देश भर में और राज्य में भी भीड़ की हत्याएं (मोब लिंचिंग) हो रहे थे। भगवा गूण्डों को वहां एक जनवादी की उपस्थिति ठीक नहीं लगा, तो निर्लज्जाता से अग्निवेश पर हमला किये।

देश में ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद का राज चलने वाले आज के समय में स्वामी अग्निवेश का निधन फासीवाद–विरोधी संघर्ष के लिए नुकसान है। हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी का सभी जनवादी, प्रगतिशील, जनहितैषियों से अपील है कि अग्निवेश की स्फूर्ति से देश में फासीवाद–विरोधी संघर्ष में हिस्सा लेवें।

अभय
प्रवक्ता
केंद्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)